कउआहँकनी रानी

एगो राजा रहन । उनका सात गो रानी रही । छव जानी के लड़िका ना भइल । बाकिर छोटकी रानी के लड़िका होखे के रहे त छवो रानी के बहुत डाह भइल कि अब राजा छोटकी रानी के आउर मनिहें ।

जब छोटकी रानी के नउआँ महीना चलल त राजा एक दिन शिकार खेले जाए लगलन त छोटकी रानी कहली कि कहीं हमरा दरद होई त हम का करब । राजा एगो घंटा देलन कि एकरा के बजा देबू त हम चल आएब ।

राजा जब चल गइलन त रानी जाँचे खातिर घंटा बजा देली । राजा चल अइलन । पूछलन त रानी कहली कि जाँचे खातिर बजवली हँ । राजा फेर शिकार पर चल गइलन । रानी फेर घंटा बजा देली । राजा फेर चल अइलन । आ अबकी खिसिया के गइलन ।

एने छवो रानी चमइन के बोला के ढेर धन देके कहली कि छोटकी रानी के लड़िका होखे त बीग दिह आ ईंटा-पत्थल ध दिह कि इहे भइल ह । चमइन मान गइली ।

छोटकी रानी के जब दरद भइल त घंटा पिटते रह गइली, राजा ना अइलन । उनका बेटा-बेटी दूनो भइल, जउआँ, त चमइन बीग के ईटा-पत्थर ध देलस ।

जब राजा अइलन त पूछलन कि कवन लड़िका भइल ह त छवो रानी कह देली कि ईटा-पत्थल भइल बा, जाके देखीं ।

राजा छोटकी रानी के घर से निकाल देलन आ एगो अलगा छोटहने घर में रख देलन आ कहलन कि भर दिन कउआ हाँकत रहिह । रानी कउआहँकनी हो गइली ।

आ ओने ऊ दूनू लड़िकन के एगो कोंहइन लेके पोसे लागल । जब ओकनी के सेयान भइलन स त कोंहार माटी के हाथी-घोड़ा बनाके देलस कि जा खेल लोग ।

एक दिन रानी लोग पोखरा में नहात रहे आ दोसरा घाट पर ऊ दूनू लड़िका खेलत रहन स आ कहत रहन स कि "माटी के हाथी माटी के घोड़ा कहीं पानी पियेला !" त ऊ लड़िका कहलन स कि "रानी कहीं ईटा-पत्थल बियाली !"

बस, छवो रानी घरे आके खटवाँस ले लेली कि "जब ले हमनी ऊ कोंहार के लड़िकन के करेजा पर ना नहाएब, ना उठब ।" तब राजा जल्लाद के बोला के कहलन कि ऊ लड़िकन के करेजा निकाल के ले आव । जल्लाद सब ओकनी के मार के करेजा निकाल ले अइलन, त रानी लोग उठ गइली ।

ऊ दूनू के करेजा धूरा पर बीग दियाइल, त लड़िका आम के गाछ भइल आ लड़की केदली के गाछ भइली ।

जब केदली में फूल लाग गइल त राजा देख के मोहा गइलन

आ सिपाही के कहलन कि फूल तूड़ ले आव । सिपाही जब फूल तूड़े गइल त केदली के गाछ कहलस कि-

"सुनऽ सुनऽ ए अमोला भउइया !
बाबा के सिपाही फूल लोढ़े हो !"

त अमोला कहलन कि-

"सुनऽ सुनऽ ए केदली बउहिना !
डाढ़-पात देहू ना आकाश हो !"

तब केदली के गाछ के डाढ़-पात उपर उठ गइल । सिपाही लवट के चल आइल ।

तब रानी लोग फूल तूड़े गइली । त फेर केदली कहली कि-

"सुनऽ सुनऽ ए अमोला भउइया !
छवो रानी फूल लोढ़े हो !"

त अमोला कहलन कि-

"सुनऽ सुनऽ ए केदली बउहिना !
डाढ़-पात देहू ना आकाश हो ।"

फेर केदली के गाछ के डाढ़-पात उपर चल गइल । त राजा अपने फूल तूड़े गइले । त केदली कहली कि-

"सुनऽ सुनऽ अमोला भउइया !
बाबा अभागा फूल लोढ़े हो !"

त अमोला कहलन कि-

"सुनऽ सुनऽ ए केदली बउहिना !
डाढ़-पात देहू ना आकाश हो ।"

आ केदली के गाछ के डाढ़-पात ऊपर चल गइल । त अन्त

में राजा कहलन कि कउआहँकनी के फूल तूड़े के भेजल जाय । त जब ऊ फूल तूड़े गइली त केंदली फेरू कहली कि-

"सुनऽ सुनऽ ए अमोला भऽइया !
अम्मा अभागी फूल लोढ़े हो !"

त अमोला कहलन कि-

"सुनऽ सुनऽ ए केदली बऽहिना ?
डाढ़-पात देहू ना झुकाय हो !"

डाढ़-पात भुँइयाँ में सोहर गइल । छोटकी रानी भर फाँड़ फूल तूड़ के दे देली । जब राजा पूछलन त कहली कि ऊ गाछ दूनो हमार बेटा-बेटी ह, रउआ गाछ उखाड़ के देखलीं ।

जब गाछ उखाड़ल गइल त ओह में से राजा के बेटा-बेटी निकलल लोग । तब राजा के सब बात के पता चल गइल । ऊ छवो रानी के आ चमइन के गड़हा खोनवा के मूड़ी निकाल के गड़वा देलन आ ओह लोग के मूड़ी पर दही धरवा के कुत्ता से कटवावल गइल । छोटकी रानी जे कउआहँकनी कहात रहली रानी भइली आ ई दूनू लड़िका लोग राजा के बेटा-बेटी बनके सुख से रहे लागल लोग ।

-संगिरिहा- **सुशीला पाण्डेय**